पतरस की पहली पत्री
1 Peter

यह अध्ययन, हिन्दी स्टडी बाइबल का एक भाग है।

इसकी विशेषताएं :

1. सभी पदों की संख्या को बायीं ओर रखा गया है, ताकि पढ़ते समय निरंतरता बनी रहे।
2. प्रत्येक पद का आरंभ बोल्ड (**Bold**) अक्षर से किया गया है।
3. एक पृष्ठ पर केवल उतने ही पद दिये गये हैं, जितने पदों का अध्ययन दिया गया है।
4. आपके सुझावों का स्वागत है।

पतरस की पहली पत्री (1Peter)

१ **पतरस** की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम, जो पुन्तुस, गलतिया,
२ कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं। **वे** परमेश्वर पिता के
पूर्व ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू

अध्याय 1

1:1 – *"प्रेरित"* – मत्ती 10:2।

***"परदेशी"* –** 2:11; इब्रा. 11:9,13। मसीह में विश्वासी इस संसार में अपनापन नहीं महसूस करते हैं। उनकी नागरिकता स्वर्ग में है (फिलि. 3:20)।

***"तितर–बितर"* –** पतरस यूनानी भाषा में एक टेक्निकल 'डायस्पोरा' शब्द का उपयोग करता है जिसका अर्थ है वे यहूदी जो पलश्तीन के बाहर रह रहे थे (यूहन्ना 7:35)। जिनको पतरस लिख रहा था, वे मसीह के अनुयायी हो चुके थे। पतरस यहूदियों के लिये प्रेरित था (गल.2:7,8) और वह अपने पत्र में यहूदी मसीहियों को निर्देश देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पेन्तेकुस्त के दिन उनमें से कुछ लोगों ने सुसमाचार सुना था (प्रेरित. 2:9)।

"पुन्तुस... बिथुनिया" – ये सभी उन क्षेत्र में थे, जिन्हें तुर्किस्तान कहा जाता है।

1:2 – *"चुने गए हैं"* – मत्ती 24:22,24,31; यूहन्ना 17:6; इफि.1:4।

***"पूर्व ज्ञान के अनुसार"* –** रोमि. 8:29 की टिप्पणी और रोमियों के अंत की टिप्पणी देखें। इस पद में त्रिएकत्व के तीन व्यक्तियों को देखें (मत्ती 3:16,17 आदि के नोट्स)। यहाँ विश्वासियों के उद्धार के विषय कई बातें कही गयी हैं।

हम इसका कारण और शुरूआत देखते हैं – परमेश्वर का चुनाव।
हम इसका तरीका और प्रक्रिया देखते हैं – आत्मा का कार्य
हम इसका उद्देश्य और लक्ष्य देखते हैं – मसीह की आज्ञाकारिता
हम इसका माध्यम और आधार देखते हैं – मसीह का रक्त
2 थिस्स. 2:13,14 से तुलना करें।

***"पवित्र करने"* –** यूहन्ना 17:17–19 में पवित्र करने पर टिप्पणी। लैव्य. 20:7 भी देखें। परमेश्वर का आत्मा इस संसार में विश्वासी को प्रत्येक से अलग करता है, पाप के विषय में कायल करता है, मन परिवर्तन के स्थान पर लाकर नया आत्मिक जीवन देता है और सत्य सिखाता है (यूहन्ना 3:5–8; 16:7–15)।

***"आज्ञा मानने"* –** परमेश्वर की बुलाहट का उद्देश्य और परमेश्वर के आत्मा का कार्य है, मसीह के प्रति आज्ञाकारी बनाना। प्रेरित. 22:10 की टिप्पणी देखें। ध्यान दें कि यह मसीह के रक्त के छिड़काव से पहले है। हम उसे पुत्र और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं इसलिये उसके लोहू के द्वारा धोए जाते और अलग किये जाते हैं। इसके पश्चात् परमेश्वर जीवन भर प्रेम से प्रेरित आज्ञाकारिता को देखना चाहता है (यूहन्ना 14:15,23; रोमि. 1:5)।

***"छिड़के जाने"* –** पुराने नियम में पशुओं के लोहू का छिड़काव तीन बातें दिखाता था :
शुद्ध किया जाना (लैव्य. 14:1–7)
याजकों का अलग किया जाना (निर्ग. 29:20–22)
परमेश्वर की वाचा की पुष्टि (निर्ग. 24:1–8)

मसीह के रक्त से विश्वासी क्षमा किये गये और पापों से धोए गए (इफि. 1:7; इब्रा. 9:14; 1 यूहन्ना 1:7)। याजकों के रूप में उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में पूरी छूट मिली है (इब्रा.

३ के छिड़के जाने के लिए चुने गए हैं, तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। **हमारे** प्रभु
यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी
४ उठने के द्वारा अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया, **अर्थात्** एक
५ अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए, **जो** तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है, जिनकी

10:19—22) और वे नयी वाचा के भागीदार बनाए गए हैं (मत्ती 26:28; इब्रा. 12:24)।

1:3 — *"परमेश्वर और पिता"* — इफि. 1:3।

***"दया"* —** तीतुस 3:5; इफि. 2:4।

***"नया जन्म"*—** यूहन्ना 1:13; 3:3—8; इफि. 2:5; याकूब 1:18; 1 यूहन्ना 3:9; 4:7; 5:1।

***"जीवित आशा"* —** रोमि. 5:2; 8:24,25; तीतुस 1:2

***"मरे हुओं में से जी उठने"* —** मत्ती 28:6; प्रेरित. 1:3; 2:24; रोमि. 1:4; 1 कुरिं. 15:12—19।

1:4 — *"मीरास"* — मत्ती 25:34; प्रेरित. 20:32; इफि. 1:14; कुलु. 1:12; इब्रा. 1:14; 6:12; याकूब 2:5। केवल परमेश्वर की सन्तान को नये जन्म के कारण मीरास मिलती है। जो लोग मसीह के लिये इस संसार का त्याग कर रहे हैं, वे लोग ऊपरी जग की मीरास को हासिल करेंगे (मत्ती 19:27—29)। सर्वप्रथम तो परमेश्वर स्वयं मीरास है (उत्पत्ति 15:1; यशा. 16:5; 73:25,26; विलाप. 3:24), इसके पश्चात् दूसरी अन्य बातें हमारी मीरास हैं (प्रका. 21:7)।

***"अविनाशी"* —** मीरास इस सृष्टि की नहीं, और न ही ऐसी कुछ वस्तु है जो नाशमान हो (1 कुरिं. 15:50,53), परंतु अविनाशी और सनातन है।

***"तुम्हारे लिये रखी है"* —** कोई और ले नहीं सकता, छीन नहीं सकता, और न चुरा सकता है। परमेश्वर ने यह मीरास विश्वासियों के लिये रखी है। जो यह विश्वास करते हैं कि स्वर्ग में उनकी ऐसी मीरास है, उन्हें इस संसार की हर वस्तु का मोह नहीं रखना चाहिये।

1:5 — *"विश्वास के द्वारा की जाती है"* — यूनानी शब्द, सेना में उपयोग में लाया जाने वाला शब्द है। परमेश्वर की सामर्थ, सुरक्षा है। वह सेनाओं का परमेश्वर है जिसके अधिकार में स्वर्ग की समस्त सेना है, और वह अपने सामर्थी दूतों को विश्वासियों की सेवा करने के लिये भेजता है (इब्रा. 1:14; भजन 91:11,12)। वह इस संसार की और अनदेखे आत्मिक संसार की बातों का प्रबंध करता है और कर सकता है ताकि उसके विश्वासियों की रक्षा हो और वे अंत तक सुरक्षित बचाए जाएँ (यूहन्ना 6:39; 10:28,29)। यह उसके पुत्र की प्रार्थना का उत्तर है (यूहन्ना 17:11,12; रोमि. 5:9,10; इब्रा. 7:25)।

यदि वे विश्वासी विश्वास से मुकर जाते हैं, क्या वे अपना उद्धार नहीं खोएंगे? परमेश्वर उन्हें "विश्वास" के द्वारा उन्हें बचाता है। विश्वास परमेश्वर का वरदान है (इफि. 2:8; फिलि. 1:29)। परमेश्वर के पास यह एक ऐसा हथियार है, जिसके द्वारा वह हमसे सम्पर्क रखता है। यह एक सिद्ध वरदान है और परमेश्वर ने जो कार्य हममें करने की योजना बनायी है उस कार्य के लिये यह पूर्ण रूप से उचित है। जो विश्वासियों को विश्वास देता है, वह उनके हृदय में विश्वास जीवित रखने योग्य है (लूका 22:31,32)। जब कुछ समय के लिये हमारा विश्वास डगमगा जाता है, वह हमारे विश्वास का नवीनीकरण करता है।

***"उद्धार के लिये जो आने वाले समय में"* —** परमेश्वर विश्वासियों को तब तक ही नहीं संभालता है जब तक कि वे पाप नहीं करते या कोई संदेह का विचार उनके मन में प्रवेश नहीं करता। वह उन्हें तब तक सम्भालेगा जब तक उनका उद्धार पूरा नहीं हो जाता। यहाँ पतरस उद्धार के, भविष्य के पहलू की बात कर रहा है। विश्वासी उद्धार पा चुके हैं (यूहन्ना 5:24; रोमि. 8:24; इफि. 2:5; 2 तीमु. 1:9; तीतुस 3:5)। वे बचाए जा रहे हैं (1 कुरिं. 1:18; 2 कुरिं. 2:15), वे बचाए जाएंगे (रोमि. 13:11;

रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए, जो आनेवाले समय में प्रगट
६ होनेवाला है, की जाती है। **और** इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि तुम अब कुछ
७ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण उदास हो। **यह** इसलिए है कि तुम्हारा परखा
हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के
८ प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। **उससे** तुम बिना देखे प्रेम रखते

फिलि. 1:28; इब्रा. 1:14; 9:28)।

1:6 – *"मगन"* – अर्थात् आनंदित। एक सच्चे मसीही होने के अनेकों चिन्हों के साथ एक है मसीह में आत्मिक आनंद होना। यह भी परमेश्वर के लोगों के लिये उसका वरदान है। यह आनंद वह प्रसन्नता नहीं है जो सब कुछ ठीक होने से हमारे स्वभाव में से निकलती है। यह अलौकिक आनंद है। यदि हमने इसका अनुभव कभी नहीं किया, तो यह इस बात का प्रमाण है कि हमने मसीह पर कभी भरोसा नहीं किया (यूहन्ना 15:11; 16:24; 17:13; प्रेरित. 5:41; 8:39; 16:34; रोमि. 5:2,3,11; 14:17; 2 कुरिं. 6:10; 8:2; गल. 5:22; 1 थिस्स. 1:6)। 'इसमें' शब्द पर ध्यान दें।

ये शब्द उन बातों की ओर संकेत हैं जो उसने तीसरे पद से कही हैं। लेखक कहता है कि है कि आनंद चार बातों से आता है,

पहला, नया जन्म;

दूसरा, जीवित आशा;

और तीसरा, स्वर्ग में रखी भविष्य की मीरास का ज्ञान;

और चौथी बात है, हमें सम्हाले रखने वाली परमेश्वर की सामर्थ का आश्वासन।

***"यद्यपि... अब"* –** ऐसे कुछ अनुभव हैं जो हमारे हृदयों में परमेश्वर के बहने वाले आनंद को रोक सकते हैं। पाप (भजन 32:3–5; 51:3,4,8,12)। संदेह (मत्ती 14:29–31; लूका 24:37,38; याकूब 1:6)। गलत शिक्षा में गिरना एक और कारण है (गल. 3:1–3; 4:15–17)। परखा जाना भी कारण है (अय्यूब 3:1–26), हालाँकि ऐसा होना आवश्यक नहीं। एक दृढ़ विश्वास कठोर परख के समय भी आनन्दित हो सकता है (प्रेरित 5:41; 2 कुरिं. 12:7–10; कुलु. 1:24; याकूब 1:2)। उदासी और आनंद एक ही समय में हो सकते हैं (2 कुरिं. 6:8–10)।

1:7 – सोने को आग से शुद्ध किया जाता है और परखा जाता है। परमेश्वर इसी कारण से विश्वासियों पर अग्निमय परीक्षा की अनुमति देता है। तुलना करें भजन 66:10–12। विश्वास सोने से ज्यादा मूल्यवान है। क्या यह दुख की बात नहीं कि लोग विश्वास की उपेक्षा करते हैं और सोने और संसार की अन्य वस्तुओं के पीछे जाते हैं? विश्वास इतना मूल्यवान इसलिये है, क्योंकि यह स्वर्ग में रखे अनंत धन को प्राप्त करता है।

***"परखा हुआ"* –** विश्वास का परखा जाना। (यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द पद 6 के यूनानी शब्द से एकदम भिन्न है।) इससे यह प्रगट होता कि हम वास्तव में विश्वास करते हैं या नहीं, या केवल ऐसा सोचते और कहते हैं। जब हम अग्निमय परीक्षाओं में से होकर गुजरते हैं और विश्वास में बने रहते हैं और संसार की ओर नहीं फिरते, तब यह इस बात का पक्का प्रमाण है कि हमारा विश्वास सच्चा है। तुलना करें मत्ती 13:21,23; इब्रा. 10:32,39।

***1:8 – "प्रेम"* –** यूहन्ना 14:15; 21:16; 1 कुरिं. 13:7; 16:22; गल. 5:6 – विश्वास सच्चा है इसका यह एक और प्रमाण है। सच्चा विश्वास और मसीह के लिये प्रेम, साथ साथ चलते हैं। यदि हमारे पास एक नहीं है, तो हमारे पास दूसरा भी नहीं होगा।

***"बिन देखे"* –** जिसे हमने कभी देखा नहीं, उससे प्रेम करना, उस पर विश्वास करना

हो, और अब तो उस पर बिना देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो
९ वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है **और** अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् अपनी प्राणों
१० का उद्धार प्राप्त करते हो। **इसी** उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूंढ़–ढांढ़ और
जांच–पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने वाला था, भविष्यद्वाणी
११ की थी। **उन्होंने** इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से
मसीह के दुखों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे
१२ समय की ओर संकेत करता था। **उन** पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं, किन्तु
तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे। उन बातों का समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला
जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया। इन बातों को
१३ स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। **इस** कारण अपनी अपनी बुद्धि की कमर

क्या संभव है? यह संभव है। हमारे पास मसीह का वचन है, और उसका आत्मा उसे विश्वासियों के लिये सच्चा प्रगट करता है।

"आनंदित" – पद 6, नहे. 8:10; भजन 4:7; 16:11; 21:6; 28:7; 43:4; 81:1; यशा. 12:3; 35:6,10; लूका 2:10; यूहन्ना 16:20–24।

1:9 – "प्राप्त करते हो" – पद 5 – परखे जाने के मध्य विश्वासी उद्धार का अनुभव करते रहे हैं और यहाँ के पश्चात् और अधिक पूर्णता में अनुभव करेंगे।

1:10 – ***"भविष्यद्वक्ताओं"*** – पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता (उत्पत्ति 20:7 के नोट्स को देखें)। उन्होंने उस अनुग्रह के विषय में लिखा जो विश्वासियों के लिये अभी है। उनके लेख यीशु और उसके द्वारा लाए जाने वाले उद्धार की भविष्यद्वाणियों, चित्रों, प्रकार और छाया से भरे हैं। (लूका 4:17–21; 24:25–27, 45–47; यूहन्ना 5:39,46; इब्रा. 8:5; 10:1)।

1:11 – पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में मसीह का जो आत्मा था उसने उन्हें वह सब लिखने के लिये प्रेरित किया था जिसे वे स्वयं समझते न थे। उन्होंने समझने के लिये स्वयं के लेखों की छानबीन की। ध्यान दें, मसीह का आत्मा मसीह के आने से पहले इस संसार में था। उसने मसीह के दुखों और महिमा के विषय में पहले से कहा। उदाहरण के लिये भजन 22:1–21 में उसके दुखों का वर्णन है, 22–31 में महिमा है। यही बात यशा. 53 के विषय में सच है। पद 1–9 में दुख है, 10–12 में महिमा। दुख और महिमा यशा. 52:13–15 और 54 में महिमा।

1:12 – परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया कि उनके वचन भविष्य में पूरे होंगे और यह कि वे भविष्य की पीढ़ियों की सेवा कर रहे थे। पुराना नियम मसीही विश्वासियों के निर्देश के लिये था (रोमि. 15:4; 1 कुरिं. 10:11)। उन्होंने वे सभी बातें कहीं जिसकी घोषणा सुसमाचार प्रचारक आज संसार में करते हैं – मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और उसका महिमा पाना। सुसमाचार के सभी प्रचारकों को "पवित्र आत्मा की सामर्थ से प्रचार करना है जो स्वर्ग से भेजा गया था" – यूहन्ना 14:16,17; लूका 24:49; प्रे.काम. 1:4,5,8; 2:1–4।

"स्वर्गदूत" – उत्पत्ति 16:7 की टिप्पणी देखें। ऐसा लगता है कि विश्वासियों के उद्धार के लिये मसीह और आत्मा के द्वारा परमेश्वर क्या कर रहा है, वे नहीं जानते हैं। परमेश्वर अभी उन्हें सिखा रहा है (इफि. 3:10)।

1:13 – इस उद्धार के संदेश के विषय में अधिक जानने के लिये स्वर्गदूत तत्पर रहते हैं। हमें कितना अधिक उत्सुक होना चाहिए, क्योंकि हमें तो यह उद्धार दिया गया है। हमारे पास नया मन हो (रोमि. 12:2; इफि. 4:23,24) और उसे परमेश्वर के वचन से भर दें। मसीही जीवन इस बात पर बल देता है

बान्धकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने
१४ के समय तुम्हें मिलनेवाला है **और** आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की
१५ पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो, **परंतु** जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी
१६ अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। **क्योंकि** लिखा है कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।
१७ **इसलिये** कि तुम, हे पिता, कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम
के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय आदरयुक्त भय के साथ बिताओ।
१८ **क्योंकि** तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है,

---

कि हम अपने विचार, मनन और अध्ययन के द्वारा परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिये प्रगट किया है उसे समझने का प्रयास करें। तुलना करें भजन 1:2; 119:26,27,34,73 आदि। इफि. 1:18; 3:18; फिलि. 1:9,10; कुलु. 1:9।

"बुद्धि की कमर बांधकर" – लम्बे वस्त्र को कमर में बांधना कार्य के लिये तैयारी दिखाता है।

"सचेत" – इसका अर्थ आत्म–संयम हो सकता है/

"अनुग्रह" – परमेश्वर ने विश्वासियों को पहले ही से अनुग्रह दिया है, परंतु और अनुग्रह आना बाकी है (पद 4; इफि. 2:7)। अनुग्रह और उसके प्रतिफल पर पूरी रीति से अपनी आशा लगाए रखने से हम इस योग्य बन जाते हैं कि हम अपने दुखों और परीक्षाओं को आनंद के साथ सह सकें।

"यीशु मसीह के प्रगट होने" – पद 7, मत्ती 24:30; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28।

1:14 – ***"आज्ञाकारी बालकों"*** – यही परमेश्वर चाहता है – पद 2, रोमि. 6:17,18; 2 कुरि. 2:9; 2 थिस्स. 2:8।

"समान" – रोमि. 12:2; 8:29।

"अभिलाषाओं" या ***"बुरी इच्छाएँ"*** – मत्ती 15:19; रोमि. 1:24; 8:5; इफि. 2:1–3; उत्पत्ति 8:21।

"अज्ञानता" – यूहन्ना 15:21; प्रेरित. 3:17; 17:30; 1 कुरि. 15:34; इफि. 4:18; 1 तीमु. 1:13।

1:15,16 – लैव्य. 20:7; यशा. 6:3; यूहन्ना 17–17–19; रोमि. 6:19,22; 2 कुरि. 7:1; इफि. 4:24; इब्रा. 12:10,14;। यही विश्वासी का लक्ष्य होना चाहिये।

"सारे चालचलन" – हमें अपने जीवन को पवित्र और अपवित्र में नहीं बांटना चाहिये। विश्वासियों के लिये सम्पूर्ण जीवन पवित्र है।

1:17 – ***"पिता"*** – मत्ती 5:16 के नोट्स देखें।

"बिना पक्षपात" – रोमि. 12:11; इफि. 6:9; कुलु. 3:25।

"परदेशी होने का समय" – पद 1। यूनानी शब्द का अर्थ है, विदेशी के समान रहना, घर से बाहर रहना।

"भय" – 2:17; उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन. 34:11–14; 86:11; 90:7–11; 111:10; नीति. 1:7; प्रका. 14:7; 15:4; 19:5। सच्चे परमेश्वर के प्रति आदर, भक्ति का ऐसा भय जो उसे अप्रसन्न नहीं करना चाहता, न ही उसका अनादर – यह आत्मिक जीवन का केन्द्र है। उसके बिना हम सच्चा धर्मी जीवन नहीं बिता सकते। यह डर हमें बुराई से अलग करता है और भला करने एवं पिता की उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। इसीलिये इसके विषय में बाईबिल में आज्ञा दी गयी है (2:17; प्र.वा. 14:7)।

1:18 – ***"छुटकारा"*** – भजन. 78:35; मत्ती 20:28; के नोट्स देखें।

"निकम्मा चालचलन" – ऐसा जीवन मसीह के पास आने से पहले हम सभों के पास था और उन सभों के पास है जो मसीह से दूर हैं (भले ही बाईबिल की समझ न रखने वाले ऐसा न सोचते हों)। तुलना करें सभोप. 1:2; 2:11। संसार की बातों से भरे रहने का अर्थ है, खाली रहना। क्या

१९ उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, **परंतु**
२० निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। **उसका** ज्ञान तो
सृष्टि की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिए प्रगट
२१ हुआ, **जो** उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया,
२२ और महिमा दी, ताकि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। **इसलिए** जबकि तुम ने
भाईचारे की निष्कपट प्रीति के कारण सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन
२३ मन से एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। **क्योंकि** तुम ने नाशमान नहीं, परंतु अविनाशी बीज से
२४ परमेश्वर के जीवित और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। **क्योंकि** हर एक
प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है। घास सूख जाती
२५ है, और फूल झड़ जाता है, **परन्तु** प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा; और यह वही सुसमाचार
का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।

हम में से कोई इस प्रकार का खालीपन अनुभव करता है? मसीह की ओर फिरें। वह हमारे जीवन को अर्थ, उद्देश्य और आशा प्रदान करेगा।

1:19 – हमको छुड़ाने और अपना बनाने के लिये परमेश्वर ने दाम चुकाया (मत्ती 20:28; 26:28; प्रेरित. 20:28; रोमि. 3:18,25)। यह अनमोल है, शब्दों से उसे आँका नहीं जा सकता।

"मेम्ना" – यूहन्ना 1:29।

"निर्दोष और निष्कलंक" – 2:22; इब्रा. 4:15; 7:26; निर्ग. 12:5; लैव्य. 1:3। मसीह द्वारा लोहू बहाये बिना, किसी के लिये कोई उद्धार नहीं है (इब्रा. 9:22)।

1:20 – संसार के बनाए जाने से पहले, मनुष्य के पाप में गिरने से पहले मनुष्य के उद्धार के लिये परमेश्वर के पास योजना थी और मसीह उस योजना का केन्द्र था। तुलना करें इफि. 1:4; प्रेरित. 2:23।

1:21 – *"उसके द्वारा"* – पतरस कहता है कि केवल मसीह के द्वारा, मनुष्य जीवित परमेश्वर पर विश्वास लाता है। मसीह के बिना लोग भले ही यह सोचते हों कि वे उसमें विश्वास करते हैं, परंतु वास्तव में नहीं करते।

"उसे... महिमा दी" – प्रे. काम. 2:32,33; 3:13; यूहन्ना 17:1। केवल इसीलिये कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, इसीलिये हमारे लिये यह संभव है कि हम जीवित परमेश्वर में विश्वास और आशा रखें – पद 3।

1:22 – हम केवल एक ही तरीके से पवित्र और शुद्ध रह सकते हैं – बाइबल में प्रगट की गई परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा। तुलना करें रोमि. 6:17–19; यूहन्ना 8:31,32। शुद्धिकरण का प्रतिफल है सच्चा प्रेम। यदि हमारे हृदय में स्वर्गिक परमेश्वर के लोगों के लिये प्रेम नहीं है, तो इसका अर्थ है कि कोई वास्तविक पवित्रता भी नहीं है, उद्धार भी नहीं है (1 यूहन्ना 3:14; यूहन्ना 13:34)। विश्वासियों के पास एक दूसरे के लिये कैसा प्रेम होना चाहिए यहाँ देखें – सच्चा, तीव्र और शुद्ध।

1:23 – *"नया जन्म"* – पद 3; यूहन्ना 1:13। परमेश्वर का वचन अविनाशी बीज है। नया जन्म परमेश्वर के वचन के द्वारा आता है जो हृदय में बोया जाता है (याकूब 1:18)।

1:24,25 – यशायाह 40:6–8। परमेश्वर के बिना मनुष्य जो कुछ करता है और जो कुछ कर सकता है, वह स्थायी नहीं होता। परमेश्वर का वचन (और उस वचन के द्वारा जिन्होंने नया जीवन पाया है वे) सदा बने रहेंगे – मत्ती 24:35; 1 यूहन्ना 2:17।

२ इसलिए सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करो, **नये** जन्मे
२ हुए बालकों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार में
३,४ बढ़ते जाओ। **क्योंकि** तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है। **उसके** पास आकर, जिसे मनुष्यों
ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवित पत्थर है,
५ **तुम** भी आप जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र
समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को

अध्याय 2

2:1 – इफि. 4:25,29,31; कुलु. 3:5–10 में सभी बातें पुराने स्वभाव की हैं और विश्वासी के जीवन में इनको स्थान नहीं मिलना चाहिये (गल. 5:19–21)।

2:2 – *"नये जन्मे हुए बालकों"* – शायद वह नये विश्वासियों के विषय में सोच रहा था। या वह पुराने विश्वासियों को उलाहना दे रहा था कि वे अपने मसीही जीवन में मंद गति से उन्नति कर रहे हैं (तुलना करें 1 कुरि. 3:1,2; इब्रा. 5:11–14)। या वह यह कहना चाहता था कि मसीह के दोबारा आने के बाद हम जो कुछ होंगे, उसकी तुलना में हम आज आत्मिक बालक हैं (तुलना करें मत्ती 18:3)।

शिशुकाल के तीन गुणों को हमें सदैव बनाए रखना है :
आत्मिक पोषण की इच्छा
अबोधता और सादगी
परमेश्वर पर निर्भरता।

यदि आत्मिक बातों के लिये कोई भूख नहीं है, पिता के वचन के लिये भूख नहीं है तो क्या यह आत्मिक जीवन न होने का चिन्ह नहीं?

"निर्मल दूध" – शुद्ध, बिना किसी मिलावट का। जिस दूध की हमें आवश्यकता है वह है परमेश्वर के वचन की शिक्षा। नये और पुराने दोनों विश्वासियों को इसकी लालसा करनी चाहिए (भजन 119:40,131)।

"बढ़ते जाओ" – इफि. 4:13–15।

2:3 – भजन 34:8।

2:4,5 – *"जीवित पत्थर"* – यीशु मसीह। विश्वासी बेजान मूर्तियों के पास नहीं, परंतु जीवित व्यक्ति के पास आते हैं।

"निकम्मा ठहराया" – मत्ती 21:42; मरकुस 8:31; 9:12; लूका 17:25; यूहन्ना 1:11; प्रेरित. 4:11।

"बहुमूल्य" – मत्ती 3:17। देखें कि परमेश्वर के विचार मनुष्यों के विचारों से कैसे भिन्न हैं। मनुष्य ने यह नहीं सोचा कि जिस भवन को वे बना रहे हैं उसके लिये मसीह योग्य है।

"जीवित पत्थर" – मसीह के पास आने पर मसीही विश्वासी स्वयं जीवित पत्थर बन जाते हैं। जीवित पत्थर 'एक जीवनदायक आत्मा' (1 कुरिं. 15:45) है।

"घर" – इफि. 2:19–22; इब्रा. 3:6; 1 कुरिं. 3:9 – परमेश्वर शिल्पकार और बनानेवाला है। हमें इस बात से आश्वस्त होना है कि उसने अपने घर की अच्छी योजना बनायी है। वह हर एक पत्थर को जानता है और जानता है कि उसे कहां रखना है। उसे कुछ पत्थर हटाकर दूसरों को वहाँ नहीं रखना होगा। परमेश्वर एक हाथ से तोड़कर दूसरे हाथ से नहीं बना रहा है। इफि. 2:21 की टिप्पणी देखें।

६ ग्रहणयोग्य हैं। **इस** कारण पवित्र वचन में भी आया है कि देखो, मैं सिय्योन में नींव का चुना
हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं; और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से
७ लज्जित नहीं होगा। **इसलिए** तुम्हारे लिए जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, परंतु जो
विश्वास नहीं करते उनके लिए जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहराया था, वह नींव
८ का पत्थर बन गया; **और** ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है। क्योंकि
६ वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिए वे ठहराए भी गए थे। **परंतु** तुम
एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की)

"याजकपन" – विश्वासी मात्र परमेश्वर के 'घर' के रूप में बनाए ही नहीं जाते हैं, वे उसके घर में याजक के रूप में सेवा करते हैं – पद 9, प्रका. 1:6; इब्रा. 10:19–22। नए नियम में विश्वासियों के बीच से कुछ विशेष लोगों को लेकर उन्हें याजक नहीं बनाया गया है। सभी विश्वासियों को याजक कहा गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नये नियम में मसीह के किसी विशेष शिष्य या प्रेरित को याजक नहीं कहा गया है। जिन लोगों को मसीह ने कलीसिया के अगुवे होने के लिये दे दिया, उन्हें याजक पद नहीं दिया गया (इफि. 4:11; 1 कुरि. 12:28)। इसे ध्यान में रखा जाए।

"आत्मिक बलिदान" – रोमि. 12:1; इब्रा. 13:15,16; याजक या पुरोहितों के पास चढ़ाने के लिये कुछ होना चाहिये। याजक होने के नाते विश्वासियों के पास चढ़ाने योग्य बलिदान वे स्वयं हैं, उनकी स्तुति, उनका प्रेम और दया के काम हैं।

2:6 – पद 4, यशा. 28:16; जकर्याह 1:4; इफि. 2:20।

2:7 – ***"बहुमूल्य"*** **–** 1:8। जो लोग उस पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये मसीह कीमती है। केवल वे ही उसके मूल्य को समझते हैं। वे ही वास्तव में उससे प्रेम रखते हैं।

"कोने का सिरा" – भजन 118:22; मत्ती 21:42; प्रेरित 4:11।

2:8 – यशा. 8:14; इफि. 9:33 जो लोग परमेश्वर के सत्य की आज्ञा नहीं मानना चाहते हैं वे सत्य के विषय में धोखा खाते हैं और यह सत्य मसीह (लूका 2:34) है। जो उसे चाहते हैं वे असफल नहीं होते हैं।

"ठहराए भी गए" – शायद पतरस यहूदी राष्ट्र द्वारा मसीह के ठुकराए जाने की ओर संकेत कर रहा है। प्रभु यीशु और प्रेरित पौलुस भजन संहिता और यशायाह से उदाहरणों को लेकर सिखाना चाहते हैं। इस विषय पर रोमि 9–11 और नोट्स देखें, विशेषकर 9:14–24,30–33; 11:7–12,22–32।

2:9 – ***"चुना हुआ"*** – इफि. 1:4,11; यूह. 15:16।

"राजपदधारी" – पद 5, इन शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा याजकपन जो राजा का है और उसकी सेवा में है, ऐसा याजकों का समाज जो एक राज्य को बनाता है (प्रका. 5:10) या ऐसा याजकपन जहाँ सभी याजक राजकुमार हैं या तीनों ही हैं।

"पवित्र राष्ट्र" – ऐसा राष्ट्र जो पृथ्वी के अन्य सभी लोगों से अलग किया गया है और परमेश्वर के प्रति समर्पित है। तुलना करें निर्ग. 19:5,6, यूह. 17:6। पतरस कलीसिया को 'नया इस्त्राएल' या 'आत्मिक इस्त्राएल' नहीं कहता। वह यहूदी विश्वासियों को लिख रहा है। इस्त्राएल राष्ट्र नहीं, जिन्होंने मसीह का तिरस्कार किया। वे तो इस्त्राएल के सच्चे यहूदी मसीही हैं। पतरस यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर को पुराने इस्त्राएल से कुछ लेना देना नहीं (प्रेरित. 1:6,7 से तुलना करें)। नए नियम का कोई भी लेखक कलीसिया को नया इस्त्राएल नहीं कहता और क्योंकि ऐसा उन्होंने ऐसा नहीं किया है, इसलिये हमें भी नहीं करना है। दूसरे धर्मों में से आए हुए विश्वासी इस्त्राएल वंश में कलम किये गये हैं। देखें रोमि. 11; इफि. 2:11–19।

निज प्रजा हो, इसलिए जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके
१० गुण प्रगट करो। **तुम** पहले तो उसके लोग नहीं थे, परंतु अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया
११ नहीं हुई थी, परंतु अब तुम पर दया हुई है। **हे प्रियो,** मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि तुम अपने
आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युध्द करती
१२ हैं, बचे रहो। **अन्य** लोगों के बीच तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिए कि जिन बातों में वे
तुम्हें बुरे जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, उन्हीं के कारण

"निज प्रजा" – यहाँ यूनानी शब्द के कई एक अर्थ हैं – 'सुरक्षित रखना', 'प्राप्त करना'।

"गुण" – इस यूनानी शब्द का अर्थ – भलाई, उत्तमता, आदि बातें जो प्रशंसनीय है। फिलि. 4:8 और 2 पतरस 1:3,5 देखें, यहाँ यूनानी में वही शब्द है। चाहे यहूदी, मसीह या अन्य जाति के लोग हों, सभी का कर्तव्य और विशेष अधिकार है कि वे एक सच्चे परमेश्वर की अच्छाई और महिमा को जगत के समान प्रस्तुत करें। हमें अपनी नहीं, उसकी महिमा का ध्यान रखना है। हमें अपनी नहीं उसकी भलाई का वर्णन करना है (तुलना करें, भजन. 40:10; 71:16; यशा. 42:12; 43:7; इफि. 1:6,12,14)।

"अद्‌भुत ज्योति" – प्रेरित. 26:18; 2 कुरिं. 4:6; इफि. 5:8; कुलु. 1:13; 1 यूहन्ना 1:5,7।

2:10 – मसीह पर विश्वास के पहले यहूदी और गैरयहूदी में लोगों का विभाजन था और वे परमेश्वर के आत्मिक लोग नहीं थे – होशे 1:9,10; 2:23; रोमि. 9:24–26; इफि. 2:11,12। लोगों को अंधकार से ज्योति में लाने में परमेश्वर दया के आधार पर कार्य करता है (तीतुस 3:5)।

2:11 – ***"परदेशी और यात्री"*** – 1:17, वे लोग जो अपने वास्तविक घर, स्वर्ग से दूर रहते हैं।

"सांसारिक अभिलाषाओं" – 1:14, ये सब इस संसार और पापमय स्वभाव की हैं। विश्वासी स्वर्ग के हैं।

"आत्मा" – मूल इब्रानी भाषा में "सायके" अर्थात् 'प्राण' शब्द आया है। 1 थिस्सल. 5:23 देखें।

"युद्ध" – बुरी बातों की चाह, शैतान, विश्वासियों के विरोध में युद्ध के लिये एक हथियार के रूप में उपयोग करता है (इफि. 6:11,12), बुरी इच्छाएँ तलवार के समान हैं जो हमारे आत्मिक जीवन को घायल करती हैं। वे दिमाग में ऐसे अग्निमय तीरों के समान है जो हमारे विचारों को परमेश्वर और पवित्रता से हटाती हैं। बन्दूक की गोली जिस तरह शरीर के लिये घातक है, उसी तरह बुरी इच्छाएँ प्राण को चोट पहुंचाती हैं और दर्द और यातना को जन्म देती हैं। हमें उन्हें अपने हृदय में जगह नहीं देनी चाहिए।

"बचे रहो" – हम परमेश्वर की सहायता से ऐसा कर सकते हैं। हर एक बुरी लालसा से बचे रहना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। यदि हम इन बुरी लालसाओं को हमारे हृदय में बस जाने की अनुमति देंगे, तो वे हम पर प्रबल होंगी, और उन्हें दूर करने के बजाय उन्हें हमारे मन में बसाए रखना हमें आसान जान पड़ेगा। बुरी लालसाओं से बचा रहना बुद्धिमानी का मार्ग है, जिसे यहोवा सिखाता है। इसमें विश्वासी के चुनाव और इच्छा का योगदान है – हमें उन्हें अपने दिमाग में स्थान न देने का चुनाव करना चाहिये।

2:12 – देखें मत्ती 5:16।

"सुन्दर" – यूनानी शब्द का अर्थ है 'सर्वोत्तम' और 'प्रशंसनीय', 'योग्य', 'आकर्षक', 'अच्छा'।

"बदनाम करते हैं" – मसीह का तिरस्कार करने वाले, विश्वासियों को बदनाम करना चाहते हैं, उनकी गलती ढूंढते हैं। जब दूसरे हमारी निन्दा करते हैं, तब हमें भले काम करने हेतु उत्साहित होना चाहिए। यह बुराई हमारे लिये भलाई का काम करेगी।

१३ कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें। **प्रभु** के लिए मनुष्यों के बीच ठहराए हुए हर प्रबन्ध
१४ के आधीन रहो; राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। **अधिकारियों** के आधीन इसलिये
क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए परमेश्वर के भेजे हुए हैं।
१५ **क्योंकि** परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से निर्बुध्दि लोगों की अज्ञानता की
१६ बातों को बन्द कर दो। **और** अपने आप को स्वतंत्र जानो, परंतु अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई
१७ के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आप को परमेश्वर के सेवक समझकर चलो। **सब** का आदर
१८ करो, भाई–बहनों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो। **हे** सेवको, पूरे आदर
के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भले और नम्र लोगों के, किन्तु कुटिल के भी।
१९ क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय के कारण दुख उठाता है, तो यह
२० सराहनीय है। **क्योंकि** यदि तुमने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इसमें क्या बड़ाई
की बात है? लेकिन यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर
२१ को भाता है। **और** तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख

"कृपा दृष्टि के दिन" – यह उस विशेष समय की ओर संकेत कर सकता है जो परमेश्वर की ओर से आशीष या न्याय का होगा।

2:13,14 – रोमि. 13:1–5।

2:15 – ***"भले काम करने"*** – मसीह के सुसमाचार के पक्ष को रखने का सबसे अच्छा उपाय है विश्वास करनेवालों का परिवर्तित और पवित्र जीवन।

"अज्ञानता" – 1:14, 2 पतरस 3:16 वे मसीह, सुसमाचार और उसके लोगों के विरोध में बोलते हैं, क्योंकि वे सच्चे यहोवा को नहीं जानते (यूह. 15:21; इफि. 4:17,18)।

"निर्बुद्धि लोग" – रोमि. 1:21,22।

2:16 – गल. 5:13; रोमि. 6:15–18।

2:17 – ***"सबका"*** – धनवान और गरीब, ऊँच या नीच, पढ़ा–लिखा या अज्ञान। सब प्रकार के घमण्ड और श्रेष्ठता की भावना को त्यागना होगा। विश्वासी दूसरों को तुच्छ न समझने पाए। तुलना करें रोमि. 12:10; याकूब 2:1–4,9; 1 कुरि. 12:14–26; प्रे.का. 6:1।

"परमेश्वर से डरो" – देखें 1:17 से सम्बंधित नोट्स। जैसे स्वर्गिक पिता से प्रेम करने की आज्ञा है, उसी प्रकार से उससे डरने की। सच पूछें तो सम्मान सहित भय और आशा स्वर्गिक पिता के प्रति प्रेम के साथ साथ चलते हैं और इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। यह आज्ञा मसीही विश्वासियों को दी गई है, इसलिये ये गुण हम में होने चाहिए। और यदि हम में इसका अभाव पाया जाता है, तो हमें दाऊद के समान प्रार्थना करनी चाहिए – भजन 86:11।

"राजा का सम्मान करो" – तुलना करें रोमि. 13:1–7।

2:18 – ***"गुलाम"*** – इफि. 6:5–8; कुलु. 3:22–24।

2:19 – ***"सराहनीय"*** – स्वयं परमेश्वर ऐसे लोगों की सराहना करेगा और उन्हें प्रतिफल देगा।

2:20 – तुलना करें 4:15,16

"धीरज धरते हो" – क्रोधित नहीं होते, और न ही बदला लेते हैं।

2:21 – ***"बुलाए भी गए हो"*** – जब स्वर्गिक पिता हमें अपने विशेष लोग होने के लिये बुलाता है, भले कार्य के लिये दुख उठाना भी उसी बुलाहट का अंग है। मसीह यीशु ने भले काम करने पर दुख उठाया। वह हमारे लिये उदाहरण है। उसने केवल भलाई ही के काम किये, परंतु हम से अधिक दुख उठाया।

२२ उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। **न** तो उसने पाप किया,
२३ और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। **उसने** गाली सुनकर गाली नहीं दी, और
दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं दी, परंतु अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौप
२४ दिया। **वह** आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों
के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं; उसी के मार खाने से तुम स्वस्थ हुए।
२५ **क्योंकि** तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, किन्तु अब अपने प्राण के रखवाले और अध्यक्ष के
पास फिर आ गए हो।

३ **हे** पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। **इसलिए** कि यदि इनमें से कोई ऐसे हों जो
वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के
३ अपनी अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं। **और** तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो,

---

"चिन्ह पर चलो" – मत्ती 4:19; 8:22; 16:24; 19:21; लूका 9:23; यूहन्ना 1:43; 10:4,27; 12:26; रोमि. 15:5; 1 कुरिं. 11:1। जो लोग सोचते हैं कि वे मसीह में विश्वास करते हैं, परंतु उसके पीछे नहीं चलते, वे स्वयं को धोखा दे रहे हैं।

2:22 – यशा. 53:9; मत्ती 27:23; यूह. 8:46; 19:4; 2 कुरिं. 5:21; इब्रा. 4:15; 7:26।

2:23 – यशा. 53:7; मत्ती 26:63, 27:12–24; लूका 23:8,9। हमें भी इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये। धर्म से न्याय करने वाला परमेश्वर है।

2:24 – यहाँ बाईबिल में स्पष्ट शब्दों में बताया गया है कि मसीह ने हमारे बदले में दुख उठाया। देखें 3:18; यशा. 53:5; मत्ती 20:28; यूह. 1:29; 10:11,14; रोमि. 3:25; 2 कुरिं. 5:14,21; इब्रा. 9:28। यहाँ मसीह के दुख और मृत्यु का अभिप्राय देखें तुलना करें रोमि. 14:9; 2 कुरिं. 5:15।

"पापों के लिये मर करके" – रोमि. 6:10–14; गल. 2:20; 5:24; कुलु. 3:5।

"धार्मिकता के लिये जीवन" – रोमि. 6:18,19; 14:19,21; 2 कुरिं. 5:21; इफि. 4:24; फिलि. 1:11; 1 तीमु. 6:11।

"चंगे हुए" – यशा. 53:5; पाप हमारे थे उसने हमारी चंगाई के लिये दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

2:25 – ***"भटकी हुयी"*** **–** यशा. 53:6।

"रखवाले" – 5:4; यूहन्ना 10:1–18।

"अध्यक्ष या बिशप" – यही शब्द प्रेरित. 20:28 में कलीसियाओं के अगुवों के लिये उपयोग हुआ है, फिलि. 1:1; तीतुस 1:7, जैसे मसीह मुख्य चरवाहा है, वह मुख्य देखरेख करनेवाला भी है।

अध्याय 3

3:1,2 – ***"आधीन रहो"*** **–** इफि. 5:22–24।

"वचन" **–** परमेश्वर का विशेष नया सुसमाचार।

"खिंच जाएं" **–** मसीह के लिये जीते जाएं। तुलना करें 1 कुरिं. 7:16।

"भय सहित पवित्र चालचलन" **–** जब सभी दूसरे उपाय असफल हो जाएं, इस तरीके से अविश्वासी मसीह के पास लाए जा सकते हैं। पत्नी का प्रचार करना पति को मसीह के पास लाने के बजाय उससे दूर ले जाएगा।

3:3,4 – यशा. 3:16–23; 1 तीमु. 2:9,10। अपने बालों के बनाने के अनेक तरीकों, गहनों के पहनने, सुंदर वस्त्रों के पहनने से नहीं, किंतु भीतरी सुंदरता से स्त्रियाँ अपने पतियों को मसीह में ला सकती

४ अर्थात् बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति भांति के कपड़े पहनना, **वरन्** तुम्हारा छिपा
हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे,
५ क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। **और** पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो
परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से सवांरती और अपने अपने पति के
६ आधीन रहती थीं। **जैसे** सारा इब्राहीम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी। इसलिए
तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियां ठहरोगी।
७ **वैसे** ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल
पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं,
८ जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं। **निदान,** सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे
९ की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। **बुराई** के बदले बुराई मत करो; और न
गाली के बदले गाली दो; परंतु इसके विपरीत आशीष ही दो; क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने
१० के लिए बुलाए गए हो। **क्योंकि** जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना

हैं। जैसे, नीतिवचन 31:10–31 से तुलना करें। कलीसियाओं और संसार की स्थिति कुछ और ही हुई होती, यदि स्त्रियाँ भीतरी सुंदरता के विषय में ध्यान देतीं।

3:5,6 – पवित्रता, परमेश्वर से आशा और आधीनता की आत्मा ऐसे चिन्ह हैं, जिन्हें स्वर्गिक पिता विश्वासी स्त्री में देखना चाहता है।

"सारा" – उत्पत्ति 18:12।

"बेटियाँ" – अब्राहम सभी विश्वासियों का पिता है (रोमि. 4:16)। सारा उन विश्वास करनेवाली स्त्रियों की माँ है जो अपने पतियों के प्रति आधीन हैं।

3:7 – इफि. 5:25,28; कुलु. 3:19। वह मसीही पतियों से कह रहा है।

"समझकर" – पति को पत्नी की समस्याओं, इच्छाओं और निर्बलताओं को समझना चाहिये और इन सब के बावजूद उन्हें आदर देना चाहिये।

"निर्बल" – शारीरिक रीति से स्त्रियाँ दुर्बल हैं, मानसिक रीति से नहीं, हालांकि उनका सोचने का तरीका और भावनात्मक बनावट भिन्न है। उनकी स्थिति (पद) भी निर्बल है, उन्हें आज्ञा माननी है, अधीन होना है।

"प्रार्थनाएं रुक न जाएं" – यदि विवाहित पुरुष स्त्री चाहते हैं कि उनकी प्रार्थना का उत्तर मिले, तो एक दूसरे के प्रति व्यवहार के सम्बंध में उन्हें सतर्क रहना चाहिये। परमेश्वर एक ऐसे पति की प्रार्थनाओं का उत्तर देने से इंकार कर सकता है, जो अपनी पत्नी से बुरा व्यवहार करता है या पत्नी की प्रार्थनाओं को भी, यदि वह अपने पति के प्रति अधीन नहीं होती।

3:8,9 – रोमि. 12:9–17; इफि. 4:2,3,32; फिलि. 2:2,3; कुलु. 3:12–14; लूका 6:28; यूह. 13:34; 1 थिस्स. 5:15

"आशीष के वारिस होने के लिये" – 1:3,5; गल. 3:14; इफि. 1:3। अभी की अपनी आशीषों और जो आशीष भविष्य में हमारे लिये है, उनको ध्यान में रखते हुए हमें दूसरों से बदला लेने के बदले आशीष देने के लिये तत्पर रहना चाहिये।

3:10–12 – भजन 34:12–16। पद 8,9 के अनुसार, यदि हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नहीं जीवन यापन करेंगे, तो वह अच्छे दिन के बजाए बुरे दिन दिखाएगा और प्रार्थना सुनने के बजाए अपने कान हम से फेर लेगा।

चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।
११ **वह** बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उसके यत्न में रहे।
१२ **क्योंकि** प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती है, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते
१३ हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है। **और** यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो,
१४ तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है? **और** यदि तुम धार्मिकता के कारण दुख भी उठाओ, तो
१५ धन्य हो; पर उनके डराने से मत डरो, और न घबराओ। **परंतु** मसीह को प्रभु जानकर अपने
अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो
१६ उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, परंतु नम्रता और भय के साथ। **और** विवेक भी
शुद्ध रखो, इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उनके विषय में वे जो
१७ तुम्हारे अच्छे मसीही चालचलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों। **क्योंकि** यदि परमेश्वर की
यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुख
१८ उठाने से उत्तम है। **इसलिए** कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक

3:13 – अविश्वासी भी, श्राप के बजाय आशीष के, दया और करूणा के व्यवहार, बुराई के बदले अच्छे व्यवहार को पहचानते हैं और प्रशंसा करते हैं।

3:14 – हमारे इस संसार में भलाई करने पर दुख उठाना सदा एक सम्भावना है – 2:19,20; 4:12,13। यदि ऐसा होता है तो हमें यीशु की कही सत्य बात को स्मरण रखना चाहिये।

"मर डरो" – यशा. 8:12 तुलना करें मत्ती 10:26,28,31; यूहन्ना 14:27।

3:15 – ***"पवित्र समझो"*** – उसका अर्थ है प्रभु को हर किसी और व्यक्ति से अलग रखना है, ताकि उसकी उपासना की जाए और आज्ञा मानी जाए। जान बूझकर अपनी इच्छा से निरंतर उसे अपने मन में प्रभु बनाकर रखें।

"सर्वदा तैयार रहो" – इफि. 5:15,16। हमें यह जानना चाहिये कि हम मसीह में विश्वासी क्यों हैं और स्वर्ग में आशा क्यों है। यह सत्य हमें दूसरों को स्पष्ट और प्रभावकारी रीति से बताना चाहिये।

3:16 – ***"विवेक"*** – प्रेरित. 23:1; 24:16; 2 कुरिं. 1:12; 1 तीमुथि. 1:5,19; 3:9।

"लज्जित" – 2:15।

3:17 – 2:20; 4:15,16 देखें।

3:18 – 2:24 देखें।

"दुख उठाया" – 2:21, 4:1।

"एक बार" – यूहन्ना 19:30, इब्रा. 9:25–28; 10:10।

"धर्मी" – लूका 23:47; प्रेरित. 3:14; 7:52; 22:14; 1 यूह. 2:1।

"अधर्मियों" – हम सभी स्वभाव से ऐसे हैं (रोमि.1:29–32; 3:9–20,23)। पापियों के लिये मसीह के दुखों के उद्देश्य को देखें – हमें पिता तक पहुंचाने के लिये। तुलना करें इफि. 2:13,18; इब्रा. 10:19–22; यूहन्ना 14:6।

"घात किया हुआ" – मत्ती 16:21; 27:50,58–60; मरकुस 15:43–45; यूहन्ना 19:32–34; 1 कुरिं.15:3।

"जिलाया गया" – मत्ती 28:6; रोमि. 1:4।

"आत्मा" – याहवे पिता का आत्मा (यूहन्ना 14:16,17; मत्ती 3:16)।

बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के निकट लाए। वह शरीर के भाव से तो घात किया गया,
१९ परंतु आत्मा के भाव से जिलाया गया। **उसी** में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया।
२० **जिन्होंने** उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा
रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा
२१ बच गए। **और** उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा,
अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक

3:19–22 – यह भाग कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी मृत्यु और स्वर्ग पर उठाए जाने के बीच मसीह ने कहीं जाकर बंदीगृह में बंद कुछ आत्माओं से कुछ कहा। पतरस यह नहीं बताता कि 'आत्माओं' या बंदीगृह और मसीह के वहाँ जाने से उसका क्या अर्थ है। कुछ लोग सोचते हैं कि पतरस का अर्थ है, मसीह के आत्मा का नूह में होना जब वह अपने समय के लोगों को संदेश दिया करता था। किंतु ऐसा अर्थ लगाने का अर्थ है पद 19 के शब्दों को अनदेखा करना।
3:19 – मृत्यु के पश्चात् मसीह कहाँ गया? "प्रेरितों का विश्वास" नामक विश्वास के अंगीकार में ये शब्द मिलते हैं : "वह नरक में उतर गया"। मसीह निश्चित रीति से दण्ड सहने नरक में नहीं उतरा। उसकी सारी पीड़ा क्रूस पर समाप्त हो गयी थी (यूहन्ना 19:30)। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि वह मृतक लोगों के क्षेत्र जिसे इब्रानी में 'शिओल' कहते हैं, गया (इफि. 4:9; भजन 16:10)।

"प्रचार किया" – पतरस यूनानी शब्द का उपयोग नहीं करता जिसका अर्थ है सुसमाचार प्रचार करना, किंतु एक शब्द जिसका अर्थ है शुभ समाचार की घोषणा करना।

"आत्माओं" – पतरस मनुष्यों की आत्माओं की ओर संकेत नहीं करता है, इसलिये यह आवश्यक नहीं कि यह सोचा जाए कि वे वही लोग थे जो जलप्रलय में मर गये थे। बाइबल में आत्माएं कभी कभी दुष्टामाओं या स्वर्गदूतों की ओर संकेत करती हैं (मत्ती 8:16; इब्रा. 1:14)।

"कैदी" – बाइबल यह नहीं कहती है कि मनुष्यों से निकली हुई आत्माएं बंदीगृह में हैं, किंतु कुछ स्वर्गदूत हैं (2 पतरस 2:4)। इसलिये आत्माओं का यहाँ संभवतः अर्थ पापी स्वर्गदूतों से है।
3:20 – *"अनाज्ञाकारी"* – जल प्रलय से पहले यह बात स्वर्गदूतों और मनुष्यों के बारे में सत्य थी (यहूदा 6,7; 2 पतरस 2:4; उत्पत्ति 6:2–7)।

"आठ" – नूह, उसकी पत्नी, उसके तीन बेटे, और उनकी पत्नियाँ (उत्पत्ति 6:10, 7:1)।

"पानी के द्वारा बच गए" – अगले पद के प्रथम वाक्य से तुलना करें। जिस प्रकार से जल प्रलय में से होकर वे बच गए, इसी प्रकार जल के बपतिस्में से होकर जाने में बपतिस्मा विश्वासी को बचाता है। बाइबल में जल में से गुजरने से वे नहीं बचे, जल पोत में आने से वे बच गए। जल प्रलय के जल में से होकर जाने वाले जल पोत (जहाज) के द्वारा वे नाश और मृत्यु से बचे।
3:21 – *"बपतिस्मा"* – मत्ती 3:6,13–16; 28:19, मरकुस 16:16; प्रेरित. 2:38। जल प्रलय का जल पानी के बपतिस्मे की ओर संकेत करता है। यूनानी शब्द "एक दम अनुरूप" जिसका उपयोग यहाँ किया गया है, इब्रा. 9:24 में बहुवचन में है। जिस प्रकार से पवित्र तम्बू में पवित्र स्थान, स्वर्ग के पवित्र स्थान का ही चित्र था, ठीक उसी प्रकार जल प्रलय का जल, बपतिस्मे का सचमुच प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्पष्ट है कि नूह और उसका परिवार पानी में रहने के कारण नहीं बचे, किंतु जलयान में आने के कारण। जलयान मसीह की ओर संकेत है। उत्पत्ति (7:24) जल ने उन्हें नहीं बचाया, किंतु जल के द्वारा वे बचाए गए थे (पद 20)। इब्रा. 11:7 स्पष्ट रीति से बताता है कि वे विश्वास के द्वारा बच गए।

२२ से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)। **वह** स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर
बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।

४ **इसलिए** जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उस ही मनसा को धारण करके
२ हथियार बान्ध लो क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया, वह पाप से छूट गया। **ताकि** भविष्य

क्योंकि जलप्रलय का जल बपतिस्मे को दिखाता है, कोई यह कैसे सोच सकता है कि बपतिस्मे की विधि स्वयं किसी को बचा सकती है? यदि हम सोचते हैं कि जलप्रलय के जल ने नूह और उसके परिवार को बचाया, तभी हमें यह मानना चाहिये कि बपतिस्मा किसी को बचा सकता है।

उद्धार और नये जीवन के लिये हम पहले मसीह में आते हैं, जो हमारा जलयान है। उद्धार के पश्चात् ही हम बपतिस्मे के लिये पानी में उतरते हैं। तुलना करें, मरकुस 16:16। यदि हम मसीह में नहीं हैं, उद्धार नहीं पा चुके हैं, हमें बपतिस्मा नहीं लेना चाहिये। बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और हमारे उसके साथ एक होने की तस्वीर है। बाइबल स्पष्ट बताती है कि हमें क्या बचाता है।

परम पिता अपनी दया से हमें बचाता है – तीतुस 3:4,5।

यीशु बचाता है – मत्ती 1:21; रोमि. 5:9,10।

यीशु का रक्त हमें बचाता है – इफि. 1:7।

यीशु का बलिदान हमें बचाता है – इब्रा. 10:10,14।

विश्वास और अनुग्रह के द्वारा हम बचाए जाते हैं – इफि. 2:8,9; प्रेरित. 16:31; रोमि. 3:22–25; यूहन्ना 5:24; इब्रा. 10:39;।

सुसमाचार पर विश्वास लाने के द्वारा हम बचाए जाते हैं – 1 कुरिं. 15:1–4; प्रेरित. 10:44–47।

पतरस कहता है कि परमेश्वर की महान करूणा है, कि हमें नए जन्म मिला ताकि हम जीवित आशा प्राप्त करें 1:3 और यह भी कि हमारे विश्वास का लक्ष्य हमारा उद्धार है – 1:9।

"शरीर के मैल को दूर करने का" – पतरस कहता है कि बपतिस्मा इसलिये नहीं है। यूनानी शब्द शरीर के अनेक अर्थ हैं – मानवीय देह भी और मनुष्य के भीतर पापी (गिरा हुआ) स्वभाव भी। बपतिस्मे का सम्बंध इन दोनों से नहीं है। इसका सम्बंध भीतर व्यक्ति से है – "शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाना"। तुलना करें इब्रा. 9:14, जहाँ हम पाते हैं कि मसीह का रक्त हमारे विवेक को शुद्ध करता है। बपतिस्मा सार्वजनिक घोषणा है कि परमेश्वर की इच्छानुसार वे अब से जीवन बिताएंगे और अपने विवेक को नहीं अपवित्र करेंगे, न ही शांत करेंगे। जिस प्रकार से यहूदी को खतना उद्धार नहीं दे सकता था, ठीक इसी प्रकार से बपतिस्मे से किसी को पाप क्षमा नहीं मिलती है – देखें रोमि. 2:28,29। मसीह के प्रति भरोसेमंद अधीनता आवश्यक है जो बपतिस्मा दिखाता है।

रोमि. 4:25 से तुलना करें। हम मसीह के जी उठने के द्वारा बचाए गये हैं।

3:22 – प्रेरित. 2:33; इफि. 1:20,21; फिलि. 2:9–11; इब्रा. 1:3।

अध्याय 4

4:1,2 – मसीह ने हमें पाप से छुड़ाने के लिये दुख उठाया (2:24; 3:18)। हमें पाप से मुठभेड़ के लिये कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिये। यदि हम इस रवैये को बनाकर रखेंगे तो यह हमारे संघर्ष मे एक हथियार होगा। मसीह पाप के लिये मर गया। विश्वासियों ने मसीह के साथ एकता को पहचानना चाहिये और इसलिये भी कि मसीह में वे पाप के लिये मर चुके हैं (रोमि. 6:5–13;

में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं, वरन् परमेश्वर की
३ इच्छा के अनुसार व्यतीत करो। **क्योंकि** अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और
लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा में
४ जहां तक हमने पहले समय गंवाया, वही बहुत हुआ। **इससे** वे अचम्भा करते हैं कि तुम ऐसे
५ भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिए वे बुरा भला कहते हैं। **परंतु** वे उसका जो
६ जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे। **क्योंकि** मरे हुओं को भी
सुसमाचार इसी लिए सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर
७ आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें। **सब** बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिए

कुलु. 3:3 देखें)। मसीह यीशु के दुखों के प्रकाश में हमें पाप से किनारा कर लेना चाहिये। अपनी इच्छा पूरी करने नहीं, किंतु पिता की इच्छा पूरी करने के लिये हमें जीना चाहिये (रोमि. 8:5,12; 12:1,2; कुलु. 1:9; 4:12; 1 थिस्स. 4:3; इब्रा. 13:21)।

4:3 – तीतुस 3:3; 1 तीमु. 1:13; इफि. 2:1–3; 1 कुरिं. 6:11 से तुलना करें। मसीह का शुभ समाचार पाप की गहराई तक पहुंचता है और सदा के लिये लोगों को बदल डालता है। यह जानें कि मूर्तिपूजक धर्म और यहाँ वर्णित जीवनशैली साथ साथ हो सकती है।

"घृणित मूर्तिपूजा" – व्यव. 7:25; 12:31; 13:12–14; 17:2–5; 27:15; 29:17; 32:16।

4:4 – ऐसे विश्वासियों का पवित्र जीवन जिन्होंने पुराना जीवन छोड़ दिया है, पुराने जीवन मे बने रहने वालों के लिये एक प्रकार से डांट है। अधर्म का जीवन जीने वालों के लिये आंशिक रीति से यही बदनामी का कारण है। देखें मत्ती 12:36; प्रेरित. 10:42; 17:31; रोमि. 2:16; 14:12; 2 तीमु. 4:1; इब्रा. 4:13।

4:5 – *"लेखा", या "हिसाब–किताब"* – रोमि. 14:12 आदि।

4:6 – यह भी एक कठिन पद है। कुछ लोगों के लिये इसका अर्थ वे मृतक लोग हैं जिन्हें उस समय सुसमाचार सुनाया गया था जब वे इस पृथ्वी पर थे। उनके और हमारे लिये जो जीवित हैं उद्देश्य एक ही था और वह यह कि उन्हें आत्मिक जीवन मिले और वे 'परमेश्वर की इच्छा' के लिये जीवित रह सकें। पद 2।

कुछ लोग इस पद का अर्थ यह लगाते हैं कि जिन लोगों को सुसमाचार सुनने का इस पृथ्वी पर अवसर नहीं मिला, मृत्यु के पश्चात् उन्हें अवसर दिया गया था। वे इस पद का सम्बंध 3:19 से लगाते हैं और यह मानते हैं कि यहाँ 'आत्माओं' का अर्थ उन लोगों की आत्मा से है जो मर चुके हैं। किंतु बाइबल मे किसी और पुस्तक में ऐसी शिक्षा नहीं है और मनुष्य के विचार पर आधारित शिक्षा को हमे महत्व नहीं देना चाहिये जो कि इधर उधर कुछ पदों या अंशों पर आधारित है। यदि ऐसी कोई शिक्षा सत्य भी है तो मालूम नहीं। हम वह जानते हैं, जो प्रगट किया गया है, देखें व्यव. 29:29 में। दूसरे अन्य लोग सिखाते हैं कि मरे हुओं का अर्थ है, पापों और अपराधों में मरे हुए (इफि. 2:1), किंतु यहाँ पर यह अर्थ सत्य नहीं लगता है।

4:7 – *"तुरंत"* – रोमि. 13:12; 5:9; प्रका. 1:3; याकूब 5:8; 2 पतरस 3:8,9; मत्ती 24:36,42। इस युग के अंत में बड़ी समस्याएं, परीक्षाएं और बड़ा धोखा (मत्ती 24:4–14, 21–25) होगा। मसीह के लिये सच्चाई से स्थिर रहने के लिये प्रार्थना अत्याधिक आवश्यक है। यहाँ सच्ची प्रार्थना के लिये दो गुण आवश्यक हैं। तुलना करें, लूका 21:36; 22:40,46।

"संयमी होकर" – यूनानी भाषा ऐसे मन की ओर संकेत करती है जो स्वस्थ है, बेकार के और भ्रष्ट विचारों से अलग है, एक ऐसा मन जो हर तरह से स्वस्थ है।

८ संयमी होकर प्रार्थना के लिए सचेत रहो। **और** सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक
९ प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है। **बिना** कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई
१० करो। **जिसको** जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले
११ भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। **यदि** कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानो
परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे
सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और समराज्य

4:8 – ***"प्रेम"*** – 1:22; यूहन्ना 13:34; 15:12,17; 1 यूहन्ना 3:11,18; 4:8। पतरस यूनानी शब्द को ईश्वरीय प्रेम के लिये उपयोग करता है 1 कुरिं. 13:1।

"ढाँपता है" – इसका अर्थ समझाये जाने की आवश्यकता है, कि अर्थ क्या है, और क्या नहीं। पतरस कलीसियाई अनुशासन के सम्बंध में या जिस पाप का खुलासा कर दूर करने की आवश्यकता बताता है, उसके विषय में नहीं कह रहा है। तुलना करें मत्ती 18:15–17; प्रेरित. 5:1–11; 1 कुरिं. 5:1–5,12,13। पतरस यह दिखाना चाह रहा है कि हमारे आपसी सम्बंधों में प्रेम की क्या भूमिका है। नीति. 10:12 देखें। प्रेम दूसरों के पापों को प्रगट नहीं करता है। यह किसी को शर्मिन्दा महसूस नहीं कराता, न ही दोष लगाता है। यह अपना भरसक प्रयत्न करके परमेश्वर की ओर ध्यान कराता है, जो वास्तव में पाप को ढाँपता है (तुलना करें, भजन 32:1,2; रोमि. 4:6–8; याकूब 5:20)।

पतरस विश्वासियों को यह भी स्मरण दिला रहा होगा कि प्रेम क्षमा करेगा और करता रहेगा (1 कुरिं. 13:5; मत्ती 18:21,22)। उसका यह अर्थ भी हो सकता है कि यदि हमारे पास प्रेम है तो परमेश्वर हमारे असंख्य (अनगिनित) अपराधों को क्षमा करता है (तुलना करें, लूका 7:47–50)। यह प्रेम जहाँ कहीं भी दिखे, उनके लक्षण को भी दिखाता है। अलौकिक प्रेम सब पापों को ढाँकने के लिये ऐसा मार्ग ढूँढता है जो परमेश्वर के न्याय और पवित्रता के अनुकूल है। तुलना करें, उत्पत्ति 3:21; 9:21–23; प्रका. 3:18,19। यह सत्य है कि प्रेम दूसरों के पापों को नहीं ढांकेगा, यदि यह उनके लिये हानिकारक है या इससे उन्हें पाप में बने रहने के लिये प्रोत्साहन मिलता है। प्रेम सदैव पापियों को इस स्थान पर लाना चाहेगा, जिससे वे अपने पापों को छोड़ दें (तुलना करें, नीति. 28:13)। वास्तविक प्रेम पाप को किसी भी प्रकार से प्रोत्साहित नहीं करेगा।

4:9 – रोमि. 12:13; 16:23; इब्रा. 3:2; 3 यूह. 8।

4:10 – ***"मरे"*** – रोमि. 12:6–8; 1 कुरिं. 12:4–11; इफि. 4:7–13।

"एक दूसरे की सेवा में" – जो लोग प्रेम करते हैं, वे अपनी योग्यताओं को व्यक्तिगत् विकास, धन और प्रसिद्धि में न लगाकर दूसरों की सहायता में लगाते हैं।

"भले भण्डारी" – मत्ती 24:45–47; 1 कुरि. 4:1,2।

4:11 – ***"बोले"*** – बाइबल का उपयोग करके किसी भी बोले जाने वाली सेवा की ओर संकेत करता है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें मसीह के स्थान में उसके प्रतिनिधि और राजदूत के रूप में अधि ाकार के साथ वचन बोलने के विषय में जागरूक रहना चाहिये।

"जो परमेश्वर देता है" – यह बहुत सम्भव है कि हम अपनी स्वभाविक योग्यता और सामर्थ में सेवा करें, किन्तु इसका कोई मूल्य नहीं है।

"परमेश्वर की महिमा प्रगट हो" – सब प्रकार की सेवा का लक्ष्य यही होना चाहिये। जो लोग अपनी महिमा के लिये बोलते हैं, सेवा करते हैं, वे परमेश्वर की उस महिमा को ले रहे हैं जो उसकी है। तुलना करें, मत्ती 6:2,5; 1 कुरिं. 10:31।

१२ युगानुयुग उसी की है। आमीन। **हे** प्रियो, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुममें
भड़की है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है।
१३ **परंतु** जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के
१४ प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। **फिर** यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी
निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर
१५ छाया करता है। **तुममें** से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ
१६ डालने के कारण दुख न पाए। **परंतु** यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो,
१७ परंतु इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे। **क्योंकि** वह समय आ पहुंचा है कि पहले
परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो
१८ उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? **और** यदि धर्मी व्यक्ति ही

4:12 – ***"अचम्भा"*** – मसीह और प्रेरितों ने पहले से चेतावनी दी थी कि समस्याएं और सताव होगा (2:20,21; 4:1; यूहन्ना 16:23; प्रेरित. 14:22; रोमि. 8:17; 2 तीमु. 3:12)।

"अग्नि" – पतरस आग से परखे जाने के विषय कहता है – यह वह प्रक्रिया है जिससे किसी धातु को शुद्ध किया जाता है। देखें 1:7; भजन 66:10। प्रभु अग्नि समान समस्याओं को अनुमति देता है ताकि हमें परखें।

4:13 –***"आनंद करो"*** – मत्ती 5:11,12; प्रेरित.5:41; रोमि. 5:3; कुलु. 1:24; याकूब 1:2। परखे जाने के समय यह प्रभु का निर्देश है। इन परीक्षाओं के प्रति हमारा रवैया महत्वपूर्ण है। कुड़कुड़ाने या निराश होने के विपरीत, हम भरोसा रखें और आनंदित हों कि वह हमारी भलाई के लिये सब कुछ करेगा। अग्निमय कठिनाईयों (सताव) को सहना मसीह के दुखों में हिस्सा लेना है (2 कुरिं. 1:5)।

"महिमा के प्रगट होते समय" – तीतुस 2:13। हमारी परख और दुखों के लिये हमें तब पुरस्कृत किया जाएगा (रोमि. 8:17,18; 2 कुरिं. 4:17,18)।

4:14 – ***"धन्य"*** – लूका 6:22 देखें। ये उस अपमान के विषय में सत्य है जो मसीह में हमारे विश्वासी होने के कारण हमें झेलने पड़ते हैं, न कि दूसरे कष्ट जो दूसरे कारणों से हमारे जीवन में आते हैं।

"महिमा का आत्मा" – परम पिता का आत्मा महिमा के स्वर्ग से आता है और विश्वासियों को वहीं ले जाता है। अब वह उनके ऊपर है (प्रेरित 1:8; 1 यूहन्ना 2:20) और धीरज से मसीह के लिये कष्ट एवं लज्जा सहने का चिन्ह है।

4:15,16 – देखें 2:19,20।

"लज्जित न हो" – प्रेरित. 5:41, इब्रा. 11:26 की तुलना करें। उसके नाम के लिये मसीहियों को दुख क्यों सहना है? हम ऐसे संसार ही में रहते हैं (यूहन्ना 15:18–25; 16:1–4)। संसार जानबूझकर अंधकार में है और आत्मिक प्रकाश से घृणा करता है (यूहन्ना 3:19,20)।

4:17 – ***"न्याय"*** – 1 कुरिं. 11:31,32, 2 थिस्स. 1:5। परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करता है, अनुशासन करता है ताकि संसार के साथ वे दोषी न ठहरें।

"घर" – गल. 6:10; इफि. 2:19

"जो नहीं मानते" – यूहन्ना 3:36; 2 थिस्स. 1:8,9; प्रेरित. 22:10 की टिप्पणी देखें।

4:18 – नीति. 11:31।

"धर्मी व्यक्ति कठिनता से उद्धार पाएगा" – मरकुस 10:24। धर्मी व्यक्ति कठिनाई से उद्धार क्यों पाएगा, नीचे देखें :

उनके शत्रु ढेर सारे और बलवान हैं – 5:8; इफि. 6:11,12।

१६ कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना? **इसलिए** जो परमेश्वर
की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य
सृजनहार के हाथ में सौप दें।

५ **तुममें** जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट
२ होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं, **कि** परमेश्वर के उस झुंड की,
जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के
३ अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिए नहीं, पर मन लगा कर। **और** जो लोग तुम्हें
४ सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो। **और** जब प्रधान

वे निर्बल हैं और उनमें पापी स्वभाव है – रोमि. 6:19; 7:18; 8:26; गल. 5:16,17; 1 यूहन्ना 1:8।

बोने और काटने के सिद्धांत से विश्वासी बच नहीं सकते – रोमि. 2:6–8; गल. 6:7,8।

परमेश्वर को चाहिये कि उन्हें व्यवहार में भी धर्मी बनाए। परमेश्वर का स्तर ऊँचा है। उसने अपने लोगों के लिये कुछ सिद्धांत रख छोड़े हैं, जिनका पालन किया जाना आवश्यक है। वे न केवल सकरे द्वार से प्रवेश करते हैं, उन्हें सकरे रास्ते पर चलना भी है (मत्ती 7:13,14)।

उन्हें अपनी इच्छा तज कर पिता की इच्छा को पूरा करना चाहिये (मत्ती 7:21) और सब कुछ छोड़कर मसीह की बातों को मानना चाहिये (लूका 14:33)।

उन्हें पवित्रता को अपनाना चाहिये (यूहन्ना 10:27; इब्रा. 12:6)।

बड़े परखे जाने और अनुशासन से होकर उन्हें सुरक्षित आना चाहिये (इब्रा. 12:5–13) और अंत तक उन्हें विश्वास में बने रहना चाहिये (इब्रा. 10:38,39)।

किंतु, हालांकि धर्मी का उद्धार कठिन है, निश्चित है (1:5; यूहन्ना 6:39; 10:28; रोमि. 5:9,10)

"भक्तिहीन" – क्योंकि धर्मी का उद्धार ही इतना कठिन (प्राप्त करने में नहीं, प्राप्त करने के बाद समस्याओं के कारण) मसीह और उसके मार्ग, पवित्र इच्छा और विश्वास को तिरस्कृत करने वालों के लिये कोई आशा नहीं।

4:19 – ***"सौंप दें"*** – 5:7; भजन 31:5, 37:5; प्रेरित. 20:32।

"भलाई करते हुए" – 2:12,15; 3:11; रोमि. 2:7; 2 कुरिं. 5:10; 9:8; गल. 6:9,10; इफि. 2:10; कुलु. 1:10; 2 तीमु. 3:17; तीतुस 2:14। परखे जाने, बदनाम किए जाने, सताव या परमेश्वर द्वारा अनुशासित किए जाने के कारण दूसरों की भलाई करना रोक नहीं देना चाहिये।

अध्याय 5

5:1 – ***"प्राचीन"*** – प्रेरित. 14:23; 15:2, 20:17; 1 तीमु. 4:14; 5:17; तीतुस 1:5।

"गवाह" – प्रथम प्रेरितों में से पतरस एक था।

"प्रगट होने वाली महिमा" – रोमि. 8:17,18।

5:2–4 – यहाँ हम देखते हैं कि "प्राचीन" (यूनानी "प्रेसबुटरौस") को रखवालों का कार्य करना है (2 तीमु. 3:1; यूनानी में एपिस्कोपौस) – यहाँ स्पष्ट है कि पतरस दोनों शब्दों को समानांतर देख रहा है। प्राचीनों या रखवालों में आवश्यक योग्यताओं को देखें (1 तीमु. 3:1–7 और तीतुस 1:5–9 में देखें)। मसीह प्रधान रखवाला है और उसने स्थानीय कलीसियाओं की देखरेख के लिये अगुवों को नियुक्त किया है – प्रेरित 20:28। मसीह ने अपने लोगों की देखभाल की जिम्मेदारी उन्हीं अगुवों के सुपुर्द की है और उन्हें अपना हिसाब किताब उसे देना पड़ेगा। जिस तरह का रखवाला वह उन्हें बनाना चाहता है, उस तरह का रखवाला बनना यह उनकी जिम्मेदारी है। तुलना करें, 2:21; यशा.

५ रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं। **हे**
नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिए
दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों
६ पर अनुग्रह करता है। **इसलिए** परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह
७ तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। **और** अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको
८ तुम्हारा ध्यान है। **सचेत** हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के

56:10–11; यिर्म. 3:15; 10:21; 12:10; 23:1–4, यहेज. 34:2–10।

"नीच कमाई" – मत्ती 6:24; 1 तीमु. 6:8–10; तीतुस 1:7।

"मन लगाकर" – तीतुस 2:14।

"आदर्श" – 1 कुरिं. 11:1; फिलि. 3:17; 2 थिस्स. 3:7; 1 तीमु. 4:12; तीतुस 2:7।

"प्रगट होगा" – मत्ती 24:30; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28; प्रका. 22:12।

5:4 – ***"मुकुट"*** – फिलि. 4:1; 1 थिस्स. 2:19; 2 तीमु. 2:5; 4:8; याकूब 1:12; विश्वासयोग्य अगुवों के लिये अद्‌भुत पुरस्कारों का प्रबंध है।

"मुरझाने का नहीं" – 1 कुरिं. 9:25

5:5 – ***"आधीन"*** – 2:13,18; 3:1; 1 कुरिं. 16:16; इफि. 5:21; याकूब 3:17; 4:7।

"दीनता" – नीति. 11:2; 15:33; सप. 2:3; फिलि. 2:3; कुलु. 3:12; तीतुस 3:2; याकूब 3:13; मत्ती 5:13; 11:29। दीनता का एक चिन्ह अपने आपको कुछ न समझना और इस बात के लिये तैयार रहना है कि दूसरे लोग हमें कुछ भी न समझें। इसमें पहली बात दूसरी से आसान है।

"अभिमानियों" – याकूब 4:6 क्या हम चाहते हैं कि स्वर्गिक पिता हमारा विरोध करे? यहाँ एक मार्ग है। घमण्ड के कारण हम परमेश्वर की उस सहायता को प्राप्त नहीं कर सकते, जिसे वह दीन लोगों को देता है। मसीह जीवन में असफलता और हार की जड़ यही है।

5:6 – याकूब 4:10।

"उचित समय" – वह नवजवानों ही से बातचीत कर रहा है (पद 5)। उचित समय वह नहीं होता है जिसे हम समझते हैं किंतु जिसे स्वर्गीय पिता समझता है। नवजवानों ने छोटी छोटी बातों में न ही घबरा जाना चाहिये और न ही अपनी बात पर अड़ना चाहिये , वे छोटी छोटी बातों में अपने विश्वासी होने का प्रमाण दें (लूका 16:10)। इस परमेश्वर द्वारा तरीके और समय के चुनाव के लिये प्रभु की बाट जोहें (भजन 75:4,7; 31:15)।

5:7 – भजन 55:22; मत्ती 6:33,34; फिलि. 6:7।

"उसको तुम्हारा ध्यान है" – मत्ती 6:30; इब्रा. 2:6–8; फिलि. 4:19। परमेश्वर हमारे विषय में सोचता है, जिस प्रकार से पिता बच्चों के विषय में सोचता है। चिंतित रहने का अर्थ है अपने आपको पीड़ित करना और उसका निरादर करना। अपनी चिंताओं को उस पर डालने का अर्थ है, उसके पास बोझ को लाना। उसकी भलाई, बुराई, बुद्धि और समझ पर भरोसा रखना कि वह हमारी भलाई के लिये सब कुछ करेगा।

5:8 – ***"सचेत हो"*** – यूनानी शब्द का अर्थ है "सचेत हो"

किंतु इसका अर्थ आत्म संयमी या सतर्क है – किसी ऐसी बात से प्रभावित नहीं होना जो मसीही जीवित के प्रतिकूल है। 1:13; 4:7; नीति. 25:28; गल. 5:23; 1 थिस्स. 5:6–8; 2 पतरस 1:6।

"जागते रहो" – इफि. 6:18; 1 थिस्सल. 5:6। शैतान उन लोगों को पकड़ सकता है जो आत्मिक रीति से सो रहे हैं या अपने में लिप्त हैं। मत्ती 4:1 में शैतान पर टिप्पणी देखें। इसलिये कि परमेश्वर के समान एक ही समय में वह सब जगह नहीं हो सकता, उसे इधर उधर भ्रमण करना

९ समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए। **विश्वास** में दृढ़ होकर, और यह जानकर
१० उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं। **अब** परमेश्वर
जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे
११ थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। **उसी**
१२ का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन। **मैंने** सिलवानस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई
समझता हूं, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा
१३ अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो। **जो** बाबुल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा
१४ पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। **प्रेम** से चुम्बन ले लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो।
तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।

पड़ता है। हालांकि वह सिंह के समान आता है, किंतु जब विश्वासयोग्य विश्वासियों का साम्हना करता है तब वह डर जाता है (याकूब 4:7) और वे उसे पैरों से रौंद सकते हैं (भजन 91:13)।

5:9 – *"उसका सामना करो"* – इफि. 6:10–18। यदि उसका साम्हना डट कर करते हैं तो यह आवश्यक नहीं कि हम परीक्षा या शैतान की चाल में फँसे (1 यूहन्ना 4:4; 1 कुरि. 10:13)।

"दुख" – जब हमारी परीक्षा या परख होती है, हमें ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हम अकेले हैं, किंतु ऐसा नहीं है। सभी विश्वासियों को इसका साम्हना करना पड़ता है।

5:10 – *"अनुग्रह"* – यूहन्ना 1:14,16,17; प्रेरित. 15:11; 20:24,32; रोमि. 1:7; 3:24; 5:21; 2 कुरिं. 8:9; 9:8; इफि. 2:8–10।

"बुलाया" – 2:9; 3:9; रोमि. 1:6,7; 8:28–30; 11:29; इफि. 4:1; इब्रा. 3:1; 2 पतरस 1:10।

"महिमा" – यूहन्ना 17:24; रोमि. 5:2; 8:17।

"मसीह में" – रोमि. 6:3–8 की टिप्पणी देखें; इफि. 1:1,3।

"दुख उठाने के बाद" – 1:6; 4:1,12। दुख के बाद महिमा, ऐसा मसीह के साथ हुआ (1:11)। यही तरीका विश्वासियों (शिष्यों) के लिये परमेश्वर ने नियुक्त किया है। जो लोग परीक्षा और कष्टों में से होकर जा रहे हैं उनके लिये प्रभु क्या करेगा यह देखें। भजन 66:12 से तुलना करें। हमें उनमें से सुरक्षित बाहर लाने की और पहले से अधिक बलवान बनाने की वह प्रतिज्ञा करता है।

5:12 – *"सिलवानस के हाथ"* – तुलना करें रोमि. 16:22; 1 कुरिं. 1:1; 2 कुरिं. 1:1; फिलि. 1:1; कुलु. 1:1। सिलवानुस और सिलास एक ही व्यक्ति हैं – प्रेरित 15:22; 2 कुरिं. 1:19; 1 थिस्स. 1:1।

"परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह" – इस पूरे पत्र में 'पिता का अनुग्रह' अनेक विषयों में से एक महत्वपूर्ण विषय है – 1:2; 10,13; 4:10; 5:5,10। मात्र परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार मिलता है और इसी अनुग्रह के कारण उद्धार पाए हुए लोग महिमा प्राप्त करते हैं।

5:13 – *"जो बाबुल में हैं"* – उत्पत्ति 10:10; 2 राजा 17:24; यशा. 13:1; यिर्म. 50–52 अध्याय। मिस्त्र में उस समय बाबुल नामक एक मिलिट्री स्टेशन (सेना की छावनी) भी था। बहुत से टीकाकार सोचते हैं कि पतरस रोम की ओर संकेत कर रहा था, किंतु इसका कोई सबूत नहीं है। किंतु यदि उसने रोम से लिखा, तो प्रश्न यह है कि साफ साफ उसने क्यों नहीं कह दिया?

"मरकुस" – प्रेरित. 12:12,25; कुलु. 4:10; 2 तीमु. 4:11। पतरस मरकुस को अपना आत्मिक पुत्र समझता था। तुलना करें 1 तीमु. 1:2।

5:14 – *"प्रेम"* – अलौकिक प्रेम – अगापे – 1 कुरिं. 13:1 की टिप्पणी देखें।

"चुम्बन" – रोमि. 16:16; 1 कुरिं. 16:20।

"शांति" – लूका 1:79; 2:14; यूहन्ना 14:27; रोमि. 1:7। जो मसीह में नहीं है उसके पास सच्ची शांति हो ही नहीं सकती।